Ist Position

21/C

गुरु तेग बहादुर जी का "सफ़र"

गुरुओं का मान रखा जिसने
इस हिन्द की शान रखी जिसने
निज मोह के छोह को त्याग दिया
स्वाभिमान का ज्ञान दिया जिसने।

प्रेम, त्याग और बलिदान के प्रतीक गुरु तेग बहादुर ने धर्म की रक्षा के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया। गुरु तेग बहादुर जी सिख धर्म के गुरुओं में नौवें गुरु का दर्जा प्राप्त है। हमारे समाज को ऐसे महापुरुषों की आवश्यकता रही है जिनके बलिदान से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि अपनी जान गवां दो लेकिन सत्य का त्याग न करो। इन्हीं में से एक महान बलिदानी थे "गुरु तेग बहादुर" जिन्होंने बिना अपने बारे में सोचे दूसरों के अधिकारों और विश्वास की रक्षा के लिए अपनी जान गवा दी थी।

गुरु तेग बहादुर जी का जन्म 1 अप्रैल 1621 ई० को अमृतसर में श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी और माता नानकी जी के घर हुआ। उनके बचपन का नाम त्यागमल था। गुरु तेग बहादुर जी बचपन से ही संत स्वरूप और निर्मल स्वभाव के थे। 1634 ई में वे अपने माता-पिता के साथ मिलकर करतारपुर के युद्ध में अपनी तलवार के खूब जौहर दिखाए। उनकी बहादुरी को देख कर उनके पिता ने उनका नाम गुरु तेग बहादुर रख दिया।

"समय के साथ बढ़ा बालक ली विद्या और बना पालक"

सिख धर्म के प्रसिद्ध गुरु तेग बहादुर सिखों के नौवें गुरु थे गुरु तेग बहादुर जी को 20 मार्च 1664 को सिक्खों के गुरु के रूप में 29 नवंबर 1675 तक सिख गुरु की गद्दी पर आसीन रहे थे, इनको सिखों द्वारा प्रेम से **'हिंद की चादर'** के नाम से भी सम्मानित किया जाता था। गुरु तेग बहादुर एक महान शिक्षक के रूप में जाने वाले एक उत्कृष्ट योद्धा, विचारक और कवि भी थे, सिखों के नौवें गुरु बहादुर जी ने आध्यात्मिक एवं अन्य बातों के अलावा ईश्वर, मन, शरीर और जुड़ाव की प्रकृति का विस्तृत विवरण लिखा था। गुरु तेग बहादुर जी एक प्रसिद्ध यात्री भी थे और जिन्होंने पूरे भारत के उपमहाद्वीप में उपदेश केंद्र स्थापित करने में अपनी महत्वपूर्ण

भूमिका निभाई।

"धर्म और मानवता की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान देने वाले सिख धर्म के नौवें गुरु गुरु तेग बहादुर जी।

गुरु तेगबहादुर जी सिखों के नौवें गुरु माने जाते हैं। औरंगज़ेब के शासन काल की बात है। औरंगज़ेब के दरबार में एक विद्वान पंडित आकर रोज़ गीता के श्लोक पढ़ता और उसका अर्थ सुनाता था, पर वह पंडित गीता में से कुछ श्लोक छोड़ दिया करता था। एक दिन पंडित बीमार हो गया और औरंगज़ेब को गीता ~~में~~ सुनाने के लिए अपने बेटे को भेज दिया परन्तु उसे बताना भूल गया कि उसे किन-किन श्लोकों को राजा के सामने पढ़ना है और किन्हें नहीं। पंडित के बेटे ने औरंगज़ेब के समाने पूरी गीता का अर्थ सुना दिया। गीता का पूरा अर्थ सुनकर औरंगज़ेब को यह ज्ञान हो गया कि प्रत्येक धर्म अपने आपमें महान है किन्तु औरंगज़ेब की हठधर्मिता थी कि वह अपने के धर्म के अतिरिक्त किसी दुसरे धर्म की प्रशंसा सहन नहीं थी। औरंगज़ेब ने सबको इस्लाम धर्म अपनाने का आदेश दे दिया। औरंगज़ेब ने कहा-

'सबसे कह दो या तो इस्लाम धर्म कबूल करें या मौत को गले लगा लें।' इस प्रकार की जबरदस्ती शुरू हो जाने से अन्य धर्म के लोगों का जीवन कठिन हो गया। जुल्म से ग्रस्त कश्मीर के पंडित गुरु तेगबहादुर के पास गए और उन्हें बताया कि किस प्रकार इस्लाम को स्वीकार करने के लिए अत्याचार किया जा रहा है। कृपया आप हमारे धर्म को बचाए। उसी समय गुरु तेगबहादुर के 9 वर्षीय पुत्र गुरु गोविंदसिंह सारी बात सुन लेता है और पूछता है कि इन समस्या को कैसे सुलझाया जाएगा? तो गुरु साहिब ने कहा - 'इसके लिए बलिदान देना होगा।' बाला प्रीतम ने कहा - 'आपसे महान पुरुष कोई नहीं है। आप बलिदान देकर सबके धर्म को बचाए।' बच्चे की बातें सुनकर वहाँ उपस्थित लोगों ने पूछा - यदि आपके पिता बलिदान देंगे तो आप यतीम हो जाएंगे। आपकी माता विधवा हो जाएगी।' बाला प्रीतम ने उत्तर दिया - 'यदि मेरे अकेले के यतीम होने से लाखो बच्चे यतीम होने से बच सकते हैं या अकेले मेरी माता के विधवा होने से लाख माताएँ विधवा होने से बच सकती हैं तो मुझे स्वीकार है। गुरु तेगबहादुर जी ने पंडितो से कहा कि आप जाकर औरंगजेब से कह दे कि यदि गुरु तेगबहादुर ने इस्लाम धर्म ग्रहण कर लिया तो उनके बाद हम भी इस्लाम धर्म ग्रहण कर लेंगे और यदि आप गुरु तेगबहादुर जी से इस्लाम धारण नहीं करवा पाए तो हम भी इस्लाम धर्म धारण नहीं करेंगे'। औरंगजेब ने यह स्वीकार कर लिया।

गुरु तेगबहादुर दिल्ली में औरंगजेब

के दरबार में स्वयं गए। औरंगजेब ने उन्हें बहुत से लालच दिए, पर गुरु तेगबहादुर जी नहीं माने तो उन पर जुल्म किए गये, उन्हें कैद कर लिया गया, दो शिष्यों को मारकर गुरु तेगबहादुर जी को डराने की कोशिश की गयी, पर वे नहीं माने। उन्होंने औरंगजेब से कहा - 'यदि तुम जबर्दस्ती लोगों से इस्लाम धर्म ग्रहण करवाओगे तो तुम सच्चे मुसलमान नहीं हो क्योंकि इस्लाम धर्म यह शिक्षा नहीं देता कि किसी पर जुल्म करके मुस्लिम बनाया जाए।'

औरंगजेब यह सुनकर आगबबूला हो गया। उसने दिल्ली के चाँदनी चौक पर गुरु तेगबहादुर जी का शीश काटने का हुक्म जारी कर दिया और गुरु जी ने हँसते-हँसते बलिदान दे दिया। गुरु तेग बहादुरजी की याद में उनके 'शहीदी स्थल' पर गुरुद्वारा बना है, जिसका नाम गुरुद्वारा 'शीश गंज साहिब' है।

थे एक वीर पुरुष ऐसे,
सिखों के नौवें गुरु थे वो।
धर्म की रक्षा की खातिर,
शीश तक अपना कटा गये वो॥

class - 12 D
NAME - SHEELA
ROLL NO - 13
D.O.B - 17/08/2002
Father name - RINKU KUMAR
ph - 9599617594 / 7529953263
student ID - 20150066064

Ist

13.9.2021